शिव तांडव स्तोत्र

Shiv Tandav Stotram – संस्कृत, हिंदी अर्थ सहित

॥ अथ रावणकृतं शिवताण्डवस्तोत्रम् ॥

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।
डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥१ ॥

अर्थ: जिनकी घनी जटाओं रूपी वन से बहती गंगा की धारा से उनका कंठ-प्रदेश पवित्र हो रहा है, जिनके गले में सर्पों की ऊँची माला लटक रही है, और जो डमरू की डम-डम ध्वनि के साथ प्रचंड तांडव कर रहे हैं, वे भगवान शिव हम सबका कल्याण करें।

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी-
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥२ ॥

अर्थ: जिनके जटा रूपी कड़ाह में घूमती देवनदी गंगा की चंचल लहरें उनके मस्तक पर शोभा पा रही हैं, जिनके ललाट पर धक-धक करती अग्नि प्रज्वलित है और जिनके सिर पर बाल चंद्रमा सुशोभित है, ऐसे शिव में मेरा प्रेम हर क्षण बना रहे।

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर-
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥३ ॥

अर्थ: जो पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती के विलास से आनंदित हैं, जिनके मन में समस्त दिशाओं के प्राणी प्रसन्नता से बसते हैं, जिनकी कृपा-दृष्टि मात्र से कठिन से कठिन विपत्ति रुक जाती है, उन दिगंबर शिव में मेरा मन आनंद पाए।

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा-
कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥४ ॥

अर्थ: जिनकी जटाओं में लिपटे सर्पों के फणों की मणियों का पीला प्रकाश दिशाओं रूपी स्त्रियों के मुख पर केसर जैसा लेप कर रहा है, और जो मदमस्त गजासुर की खाल को उत्तरीय की तरह ओढ़े हैं, उन भूतनाथ शिव में मेरा मन अद्भुत आनंद पाए।

chalisa-pdf.com

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर-
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ॥५ ॥

अर्थ: इंद्र आदि सभी देवताओं के झुके हुए मस्तकों के फूलों की धूल से जिनके चरण-कमल धूसर हो गए हैं, जिनकी जटाएँ सर्पराज की माला से बंधी हैं और जिनके सिर पर चंद्रमा है, वे शिव हमें दीर्घकाल तक समृद्धि प्रदान करें।

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा-
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं
महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः ॥६ ॥

अर्थ: जिन्होंने अपने ललाट की अग्नि की चिंगारी से कामदेव को भस्म कर दिया, जिन्हें देवराज इंद्र भी प्रणाम करते हैं, जिनका मस्तक चंद्रमा की किरणों से शोभित है, ऐसे जटाधारी महाकपाली शिव हमें संपत्ति प्रदान करें।

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥७ ॥

अर्थ: जिनके विकराल ललाट पर धधकती अग्नि में प्रचंड कामदेव की आहुति हो गई, और जो पार्वती जी के श्रृंगार की चित्र-रचना करने वाले एकमात्र कलाकार हैं, उन त्रिनेत्रधारी शिव में मेरी प्रीति बनी रहे।

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्-
कुहूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबद्धकन्धरः ।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ॥८ ॥

अर्थ: जिनका कंठ नए बादलों से घिरी अमावस्या की आधी रात के घने अंधकार जैसा श्याम है, जो गंगा को धारण करते हैं, गजचर्म ओढ़ते हैं, चंद्रमा से सुशोभित हैं और संपूर्ण जगत का भार उठाते हैं, वे शिव हमें श्री प्रदान करें।

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-
वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥९ ॥

अर्थ: जिनका कंठ खिले हुए नील कमलों की श्यामल आभा जैसा है, जिन्होंने कामदेव, त्रिपुरासुर, संसार-बंधन, दक्ष के यज्ञ, गजासुर, अंधकासुर और स्वयं यमराज का भी अंत किया, मैं उन शिव का भजन करता हूँ।

अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥१० ॥

अर्थ: जो सर्वमंगला पार्वती की कला रूपी कदंब-मंजरी के मधुर रस का पान करने वाले भ्रमर के समान हैं, जो काम, त्रिपुर, भव, यज्ञ, गजासुर, अंधकासुर और यम का अंत करने वाले हैं, मैं उन शिव को भजता हूँ।

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वसद्-
विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् ।
धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ॥११ ॥

अर्थ: जिनके मस्तक पर तेजी से घूमते सर्पों की फुफकार से ललाट की अग्नि और भड़क उठती है, और जो धिमि-धिमि बजते मृदंग की मंगल ध्वनि की लय पर प्रचंड तांडव कर रहे हैं, उन भगवान शिव की जय हो।

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्-
गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ॥१२ ॥

अर्थ: पत्थर और सुंदर शय्या, सर्प और मोतियों की माला, बहुमूल्य रत्न और मिट्टी का ढेला, मित्र और शत्रु, तिनका और कमल-नयनी, प्रजा और राजा, इन सबमें समान भाव रखते हुए मैं कब सदाशिव का भजन करूँगा?

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन् ।
विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥१३ ॥

अर्थ: कब मैं गंगा तट के किसी कुंज में रहते हुए, दुर्बुद्धि से मुक्त होकर, सिर पर हाथ जोड़े, चंचल नेत्रों को स्थिर करके, ललाट पर तिलक लगाए 'शिव' मंत्र का उच्चारण करते हुए सुखी हो जाऊँगा?

निलिम्पनाथनागरीकदम्बमौलिमल्लिका-
निगुम्फनिर्भरक्षरन्मधूष्णिकामनोहरः ।
तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनीमहर्निशं
परश्रियः परं पदं तदङ्गजत्विषां चयः ॥१४ ॥

अर्थ: देवांगनाओं के केशों में गुँथी मल्लिका की मालाओं से झरते मधु जैसा मनोहर, परम शोभा का धाम, शिव के अंगों की कांति का वह पुंज हमारे मन को दिन-रात आनंद देता रहे।

प्रचण्डवाडवानलप्रभाशुभप्रचारिणी
महाष्टसिद्धिकामिनीजनावहूतजल्पना ।
विमुक्तवामलोचनाविवाहकालिकध्वनिः
शिवेति मन्त्रभूषणा जगज्जयाय जायताम् ॥१५ ॥

अर्थ: प्रचंड वड़वानल जैसी तेजस्वी, अशुभ का नाश करने वाली, अष्ट सिद्धियों द्वारा गाई जाने वाली, शिव-पार्वती विवाह के समय गूँजी मंगल ध्वनि जैसी और 'शिव' मंत्र से सुशोभित यह स्तुति संसार की विजय के लिए हो।

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम् ।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम् ॥१६ ॥

अर्थ: जो मनुष्य इस उत्तम से उत्तम स्तोत्र का नित्य पाठ, स्मरण और उच्चारण करता है, वह सदा शुद्ध रहता है और शीघ्र ही गुरु शिव की भक्ति पाता है। उसके लिए कोई दूसरी गति नहीं, क्योंकि शंकर का चिंतन ही प्राणियों का मोह दूर करता है।

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥१७ ॥

अर्थ: प्रदोष काल में शिव पूजा के अंत में जो रावण द्वारा गाए गए इस स्तोत्र का पाठ करता है, भगवान शंभु उसे रथ, हाथी और घोड़ों से युक्त स्थिर लक्ष्मी सदा प्रसन्नता के साथ प्रदान करते हैं।

॥ इति श्रीरावणकृतं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

chalisa-pdf.com

Shiv Tandav Stotram Lyrics in English

Jatatavi-galajjala-pravaha-pavita-sthale
Gale-avalambya lambitam bhujanga-tunga-malikam
Damad-damad-damad-daman-ninadavad-damarvayam
Chakara chanda-tandavam tanotu nah shivah shivam ||1||

Jata-kataha-sambhrama-bhramanna-limpa-nirjhari
Vilola-vichi-vallari-virajamana-murdhani
Dhagad-dhagad-dhagaj-jvalal-lalata-patta-pavake
Kishora-chandra-shekhare ratih pratikshanam mama ||2||

Dharadharendra-nandini-vilasa-bandhu-bandhura
Sphurad-diganta-santati-pramodamana-manase
Kripa-kataksha-dhorani-niruddha-durdharapadi
Kvachid-digambare mano vinodametu vastuni ||3||

Jata-bhujanga-pingala-sphurat-phana-mani-prabha
Kadamba-kunkuma-drava-pralipta-digvadhu-mukhe
Madandha-sindhura-sphurat-tvaguttariya-medure
Mano vinodam-adbhutam bibhartu bhuta-bhartari ||4||

Sahasra-lochana-prabhrity-ashesha-lekha-shekhara
Prasuna-dhuli-dhorani-vidhusaranghri-pitha-bhuh
Bhujanga-raja-malaya nibaddha-jata-jutakah
Shriyai chiraya jayatam chakora-bandhu-shekharah ||5||

Lalata-chatvara-jvalad-dhananjaya-sphulinga-bha
Nipita-pancha-sayakam naman-nilimpa-nayakam
Sudha-mayukha-lekhaya virajamana-shekharam
Maha-kapali sampade shiro jatalam-astu nah ||6||

Karala-bhala-pattika-dhagad-dhagad-dhagaj-jvalad
Dhananjayahuti-krita-prachanda-pancha-sayake
Dharadharendra-nandini-kuchagra-chitra-patraka
Prakalpanaika-shilpini trilochane ratir-mama ||7||

Navina-megha-mandali-niruddha-durdhara-sphurat
Kuhu-nishithini-tamah-prabandha-baddha-kandharah
Nilimpa-nirjhari-dharas-tanotu kritti-sindhurah
Kala-nidhana-bandhurah shriyam jagad-dhurandharah ||8||

Praphulla-nila-pankaja-prapancha-kalima-prabha
Valambi-kantha-kandali-ruchi-prabaddha-kandharam

chalisa-pdf.com

Smarachchidam purachchidam bhavachchidam makhachchidam
Gajachchidandhakachchidam tam-antakachchidam bhaje ||9||

Akharva-sarva-mangala-kala-kadamba-manjari
Rasa-pravaha-madhuri-vijrimbhana-madhuvratam
Smarantakam purantakam bhavantakam makhantakam
Gajantakandhakantakam tam-antakantakam bhaje ||10||

Jayatvadabhra-vibhrama-bhramad-bhujangamashvasad
Vinirgamat-krama-sphurat-karala-bhala-havyavat
Dhimid-dhimid-dhimidhvanan-mridanga-tunga-mangala
Dhvani-krama-pravartita-prachanda-tandavah shivah ||11||

Drishad-vichitra-talpayor-bhujanga-mauktika-srajor
Garishtha-ratna-loshthayoh suhrid-vipaksha-pakshayoh
Trinaravinda-chakshushoh praja-mahi-mahendrayoh
Sama-pravrittikah kada sadashivam bhajamyaham ||12||

Kada nilimpa-nirjhari-nikunja-kotare vasan
Vimukta-durmatih sada shirahstham-anjalim vahan
Vilola-lola-lochano lalama-bhala-lagnakah
Shiveti mantram-uchcharan kada sukhi bhavamyaham ||13||

Nilimpa-natha-nagari-kadamba-mauli-mallika
Nigumpha-nirbhara-ksharan-madhushnika-manoharah
Tanotu no mano-mudam vinodinim-aharnisham
Parashriyah param padam tad-angaja-tvisham chayah ||14||

Prachanda-vadavanala-prabha-shubha-pracharini
Mahashta-siddhi-kamini-janavahuta-jalpana
Vimukta-vama-lochana-vivaha-kalika-dhvanih
Shiveti mantra-bhushana jagaj-jayaya jayatam ||15||

Imam hi nityam-evam-uktam-uttamottamam stavam
Pathan-smaran-bruvan-naro vishuddhim-eti santatam
Hare gurau subhaktim-ashu yati nanyatha gatim
Vimohanam hi dehinam sushankarasya chintanam ||16||

Puja-avasana-samaye dashavaktra-gitam
Yah shambhu-pujana-param pathati pradoshe
Tasya sthiram ratha-gajendra-turanga-yuktam
Lakshmim sadaiva sumukhim pradadati shambhuh ||17||

और भी चालीसा, आरती व स्तोत्र PDF के लिए देखें: www.chalisa-pdf.com